महात्मा गांधी ने अपने कई पत्रों.....

पेज पांच का शेष

13 जनवरी, 1929 के 'नवजीवन' में विद्यार्थियों को संबोधित एक लेख में गांधी कहते हैं- 'आत्मबल और पशुबल दोनों प्रकार के युद्धों का रास्ता एक खास हद तक एक ही है. इस्लाम में खलीफाओं ने, ईसाई धर्म में क्रूसेडरों ने, राजनीति में क्रामवेल और उसके योद्धाओं ने भोग-विलास का अपूर्व त्याग किया था. आधुनिक उदाहरण लें तो लेनिन, सन यात-सेन आदि ने सादगी, दु:खादि की सहनशक्ति, भोग-त्याग, एकनिष्ठा और सतत जागृति का योगियों को भी शरमाने वाला नमूना दुनिया के सामने प्रस्तुत किया है.' मई, 1929 में किसी ने गांधीजी से पत्र लिखकर पूछा कि क्या देश सेवा के लिए वकालत की पढ़ाई करना जरूरी है? इसके जवाब में 19 मई, 1929 के 'नवजीवन' में गांधी लिखते हैं- 'प्रताप, शिवाजी, नेलसन, वेलिंग्टन, क्रूगर वगैरह वकील नहीं थे. अमानुल्ला वकील नहीं हैं, न लेनिन ही वकील था. इन सबमें वीरता, स्वार्थ-त्याग, साहस आदि गुण थे, यही वजह थी कि वे इतनी सेवा कर सके.'

1932 में प्रकाशित जेम्स मैक्सटन की पुस्तक 'लेनिन' भी महात्मा गांधी ने पढ़ी थी. इसका पता हमें 28 सितंबर, 1935 को उनके द्वारा लिखे एक पत्र से चलता है. 17 जुलाई, 1941 को एक पत्र में गांधी लिखते हैं - 'स्टालिन और लेनिन में मैं बड़ा फरक पाता हूं. लेनिन का रूस आज नहीं रहा.' 16 जुलाई, 1945 को साम्यवादी शांता पटेल को एक पत्र में गांधी लिखते हैं- 'कम्युनिज़्म और कम्युनिस्ट के बीच भेद करना. फिर कम्युनिज़्म भी मार्क्स का एक है, लेनिन का दूसरा और स्टालिन का तीसरा. फिर तीसरे के भी दो भेद हैं. गांधी एक, गांधीवाद दूसरा और गांधीवादी तीसरे. ऐसे भेद रहते ही हैं और रहा ही करेंगे. कच्ची बुद्धि वाले ही इनमें से किसी एक के साथ हो जाते हैं.'

1940 के दशक में भारतीय साम्यवादियों द्वारा की जानेवाली तोड़-फोड़ की कार्रवाइयों की गांधीजी ने लगातार आलोचना की थी. इस पर 11 जून, 1947 को मनु गांधी ने शिकायती लहजे में महात्मा गांधी से पूछा कि आप साम्यवादियों की इतनी आलोचना क्यों करते हैं? इसके जवाब में गांधीजी ने कहा था- 'छिपकर सरकारी इमारतों को आग लगाना, तार और डाक की तारें काट डालना, इन बातों से क्या समानता आनेवाली है? और इनसे जो नुकसान होता है वह जनता के ही पैसे का न? इसी से मैं इस वाद को नहीं मानता. मेरा साम्यवाद तो सौम्यता और बहादुरी से भरा है. छिपकर दूसरों को नुकसान पहुंचाना, नामर्दगी, जंगलीपन और कायरता का सूचक है.'

'...और हमारे तो खून में ही साम्यवाद अथवा समाजवाद भरा है. यदि हम अपनी प्रार्थना, अपने वेद अथवा शास्त्रों को टटोलें तो हमें ऐसे अनेक दृष्टांत मिलेंगे. हम रोज सवेरे की प्रार्थना में क्या कहते हैं ?न त्वहं कामये राज्यं न स्वर्गं नापुनर्भवम्.कामये दु:खतप्तानां प्राणिनामार्तिनाशनम्..' यानी 'मुझे न तो राज्य की इच्छा है और न स्वर्ग की. मुझे तो मोक्ष की भी इच्छा नहीं है. मेरी तो केवल यही कामना है कि दु:ख से पीड़ित जनों की पीड़ा हर सकूं.' साम्यवाद के नेता लेनिन लोगों को इससे ज्यादा और क्या दे सकते हैं कि हम उन पर ज्यादा मोहित हो जाएं.'

आज पूरी दुनिया में बेरोजगार युवाओं का एक बड़ा हिस्सा सांप्रदायिक कट्टरता और विचारधारात्मक प्रतिक्रियावाद के चंगुल में फंसता जा रहा है. अपने दुराग्रहों की तात्कालिक संतुष्टि के लिए मूर्तियों और ऐतिहासिक धरोहरों को ध्वस्त करना इनके लिए सबसे आसान कार्य होता है. वैसे देखा जाए तो प्रतिक्रियावादी महिमामंडन के जोर में किसी एक शख्सियत की बेशुमार मूर्तियां लगाना भी ऐसे ही किसी दूसरे शख्सियत की मूर्तियां लगाने और हटाने जैसी प्रतिक्रियाओं को जन्म देता है.

मूर्तियों से कभी भी विचार जिंदा नहीं रहते, बल्कि मूर्तियां अक्सर जड़तावाद, व्यक्तिपूजा और सामाजिक टकरावों को बढ़ावा देती हैं. सड़कों, भवनों, मैदानों, हवाई अड्डों से लेकर योजनाओं तक में हम इस नाम और मूर्ति की प्रतिक्रियावादी राजनीति को घटित होते देख सकते हैं. इस प्रतिक्रियावाद के नशे में जिस गति से और जिस संख्या में हम मूर्तियां लगाते जा रहे हैं, इससे आनेवाली पीढ़ियों के लिए एक पर्यावरणीय समस्या भी खड़ी हो सकती है।

क्या हम आशा करें कि हमारी नई नस्लें 'मूर्तिभंजन' का सही अर्थ लेते हुए, मनुष्यता-विरोधी सामाजिक रुढ़ियों को तोड़ते हुए आगे बढ़ेंगी और स्वयं को असली 'मूर्तिभंजक' साबित करेंगी। उनको बस इतना ध्यान रखना होगा कि ऐसे मूर्तिभंजन के लिए हथौड़े या बुल्डोजर की जरूरत नहीं होती, उसके लिए जरूरत होती है—विनययुक्त मेधा की, वैज्ञानिक चेतना की, ऐतिहासिक व्यक्तित्वों में यथासंभव गुणदर्शन की, केवल विचार और प्रेम की शक्ति में विश्वास करने की।

मूर्ति संवाद

दस कहानियां / असगर वजाहत

1.

लेनिन की मूर्ति तोड़ी तो दी गई लेकिन फिर सवाल पैदा हुआ कि उसे कहां फेंका जाए। काफी बहस होती रही। हील - हुज्जत होती रही। जब कुछ तय न पा सका तो लेनिन की टूटी हुई मूर्ति ने कहा, मुझे वहीं फेंक दो जहां हज़ारों साल से टूटी हुई मूर्तियां फेंकी जाती रही हैं।

2.

लेनिन की मूर्ति तोड़ तो दे गई लेकिन फिर बहस होने लगी की मूर्ति किसने तोड़ी है। सब लोग अपना अपना दावा पेश करने लगे । किसी ने कहा, मैंने तोड़ी है। किसी ने कहा, मैंने तोड़ी है। बड़ी बहस शुरू हो गई जो लात - जूते में बदल गई । क्योंकि लेनिन की मूर्ति तोड़ने वाले का शानदार कैरियर सामने था। जब यह तय न हो पाया कि लेनिन की मूर्ति किसने तोड़ी है तो लेनिन की टूटी हुई मूर्ति ने कहा, तुम लोगों ने नहीं, मेरे लोगों ही ने मेरी मूर्ति तोड़ी है।

3.

लेनिन की मूर्ति जब तोड़ी जा रही थी तो मूर्ति के चेहरे पर मुस्कुराहट आ गई। कुछ देर बाद मूर्ति हंसने लगी।

तोड़ने वालों को बड़ी हैरानी हुई । उन्होंने पूछा, आप क्यों हंस रहे हैं? आपको तो तोड़ा जा रहा है।

मूर्ति ने कहा, तुम लोग मेरी पसंद का काम कर रहे हो।

तोड़ने वालों ने कहा, कैसे?

लेनिन बोले , मैं जीवन भर यही करता रहा हूं।

4.

लेनिन की मूर्ति ने अपने तोड़ने वालों से सवाल किया।

मूर्ति ने कहा, तुम लोग किसकी मूर्ति तोड़ रहे हो?

लोगों ने कहा, लेनिन की ।

मूर्ति ने कहा, मेरा पूरा नाम क्या है जानते हो?

तोड़ने वालों ने कहा, अरे हमें अपने-अपने नाम नहीं मालूम, आपका नाम क्या जानेंगे।

5.

लेनिन की टूटी हुई मूर्ति ने तोड़ने वालों से पूछा तुम लोग सिर्फ तोड़ते हो या या कुछ जोड़ भी सकते हो ?

उन लोगों ने कहा, जोड़ने का काम हमारा नहीं है ।

मूर्ति ने पूछा, जोड़ने वाले कहां हैं?

तोड़ने वालों ने जवाब दिया, वे उधर बैठे हैं।

- क्यों उधर क्यों बैठे हैं ? मूर्ति ने पूछा

तोड़ने वालों ने कहा, हमने इतना तोड़ दिया है कि अब उनकी समझ में नहीं आ रहा कि क्या क्या जोड़ें।

6.

मूर्ति ने तोड़ने वालों से पूछा, तुम मूर्ति के अलावा और क्या-क्या तोड़ सकते हो ?

तोड़ने वालों ने कहा, बहुत कुछ तोड़ सकते हैं। जिसे भी ना पसंद करते हैं, जो हमें पसंद नहीं है उसे हम तोड़ देते हैं। बड़ी-बड़ी इमारतें तोड़ देते हैं। जिंदा लोगों को तोड़ देते हैं। और तो और हम मुर्दा लोगों को तोड़ देते हैं। हमसे अच्छा यह काम और कोई नहीं कर सकता।

मूर्ति ने पूछा, क्या तुम जोड़ना भी जानते हो?

तोड़ने वालों ने कहा, ये क्या होता है?

7.

मूर्ति ने अपने गिराने वालों से पूछा, यह बताओ क्या संसार के दूसरे देशों में भी मूर्तियां तोड़ी जा रही हैं?

मूर्ति गिराने वाले प्रसन्न हो गए ।

उन्होंने कहा, यह पवित्र काम तो सारे संसार में हो रहा है ।

मूर्ति ने पूछा, कौन कौन कर रहा है?

मूर्ति गिराने वालों ने कहा, जो जो कर रहे हैं, सब हमारे भाई हैं।

8.

मूर्ति तोड़ने वालों ने मूर्ति से पहला सवाल किया, तुम्हें कोई बचाने क्यों नहीं आ रहा ?

मूर्ति ने जवाब दिया, अगर वे अपने आपको बचा पाएंगे तो मुझे बचाने आएंगे।

9.

मूर्ति ने अपने तोड़ने वालों से पूछा, आप लोगों को मुझ से इतनी घृणा थी तो आपने मुझे पहले क्यों नहीं तोड़ा?

मूर्ति तोड़ने वालों ने कहा, विरोध का डर था।

मूर्ति ने पूछा, आप विरोध को पसंद नहीं करते?

तोड़ने वालों ने कहा, बिल्कुल नहीं हम विरोध और विरोधियों को पसंद नहीं करते। हम वीर हैं। हम अपनी शक्ति वहीं दिखाते हैं जहां कोई विरोध नहीं होता।

10.

लेनिन की मूर्ति ने पूछा, तुम लोग मूर्तियों के अलावा और क्या-क्या तोड़ोगे?

उन्होंने कहा, हम तोड़ने में एक्सपर्ट हैं। जो चाहेंगे तोड़ देंगे।

लेनिन की मूर्ति ने कहा, तुम सब कुछ तोड़ सकते हो लेकिन लोगों का हौसला नहीं तोड़ सकते।

भारत सरकार के वित्त सचिव हंसमुख अधिया को नीरव मोदी से मिला सोने के बिस्कुट का उपहार

भाड़ में गई सरकारी कर्मचारियों की आचरण नियमावली

हँसमुख आधिया वित्त सचिव भारत सरकार ने महंगा उपहार लिया और बाद में कहा कि उन्होंने इसे तोशाखाना में जमा करा दिया।

सरकारी कर्मचारियों की आचरण नियमावली का क्या यह उल्लंघन नहीं है? नौकरशाही में भ्रष्टाचार कोई असामान्य बात नहीं है और न ही उपहारों का लेना देना भी नयी बात है।

पर असामान्य बात यह है कि यह तथ्य उजागर हो जाने पर भी हंसमुख अधिया के खिलाफ सरकार ने कोई कार्यवाही नहीं की है। सरकार को तत्काल कार्यवाही करनी चाहिये। यह आरोप भाजपा के ही सांसद सुब्रमण्यम स्वामी ने लगाया है। स्वामी के अनुसार उन्होंने सोने के बिस्कुट उपहार में लिये। जब एक टीवी उपहार में लेने की शिकायत होने पर कनिष्ठ कर्मचारी भ्रष्टाचार निवारण संगठन या सतर्कता की जांच झेलता है , महीनों निलंबित रहता है तो यही जांच क्यों न वित्त सचिव के भी खिलाफ हो।

अधिया का पिछली दीवाली पर नीरव मोदी की सोने की सिल्लियों को सप्रेम ग्रहण करना क्या कहलाता है -

- काला धन?
- रिश्वत?
- भ्रष्टाचार?
- देशद्रोह?
- आइएएस अफ़सरों के लिये तय आचरण नियमावली के प्रतिकूल जाते हुए कीमती उपहार वसूली?

घर में नौकर ने वह पैकेट खोला। और लोग भी थे। भेद भेद न रहा। सबूत हैं। सबसे बड़ा तो स्वयं अधिकारी का संस्वीकार। कि हाँ, लिया था।

लिया, पर रखा नहीं था, तोशाख़ाने में जमा करवा दिया था।

अब अगली घुंडी ये बतायी जाती है कि तोशेख़ाने में इस काले सोने की आमद का कोई रिकॉर्ड नहीं! दूसरी बात ये कि सरकारी तोशाख़ाना कोई आपराधिक अदालत का पुलिसिया मालख़ाना नहीं होता।

ज़ाहिर है महोदय ने कोई एफ़आईआर ही नहीं करवायी जैसी चंडीगढ़ के जज रिश्वत कांड में हुई थी।

क्या जनाब सच नहीं बोल रहे हैं, क्या वे सामान्य सदाचार से इस क़द्र नाआशना हो चुके?

. . . आइएएस एसोसियेशन मामले का आपात्कालीन नोटिस ले सकती है। एक सड़ी हुई मछली और सारा तालाब वाले न्याय से।

अदालते आलिया सुओ मोटू नोटिस ले सकती है।

और हमारी अच्छे दिनों की सरकार तो ले ही सकती है।

सरकार से ही हमारे माननीय सुब्रह्मन्यन स्वामी साहब ने मांग की है कि रिश्वत के भ्रष्टाचार के आरोप में अधिया के ऊपर तुरन्त क़ानूनी आपराधिक कार्रवाई की जाय क्योंकि अफ़सर ने रिश्वत भेजनेवाले निरव मोदी के खिलाफ़ पुलिस में रिपोर्ट दर्ज़ नहीं करवाई। स्वामी क़ानूनी मीनमेख के माहिर माने जाते हैं। वह सत्ताधारी दल के नेता हैं। उनकी तो सरकार ही है!

. .और सरकारों में मनमाने तबादलों पर ही मुहर लगानेवाला सिविल सर्विसिज़ बोर्ड क्या कर रहा है?

दिवालिया क़ानून में असल चोर को अभयदान!

संजीव असीम

दिवालिया कानून में सिर्फ कंपनी की संपत्ति से वसूली होगी, जमानती (गारंटर) की संपत्ति से कतई नहीं!

मोदी के भाषणों, दिवालिया कानून और रोटोमैक वाले कोठारी जैसे एक-दो की गिरफ़्तारी से कुछ पूंजीपति सचमुच यह समझ कर नाराज न हो जाएं कि अब सच में ही उनसे कर्ज वसूली में सख्ती की जाएगी, इसके लिए दिवालिया अदालत (एनसीएलटी) ने उनका डर दूर करने वाला फैसला सुनाया है।

गारंटर कौन होता है - कंपनी चलाने वाला प्रमोटर या मालिक। उसकी व्यक्तिगत जमानत भी होती है, कई बार संपत्ति भी गिरवी होती है। पुराने कानून में बैंक उनकी संपत्ति से वसूली कर सकते थे - जैसे माल्या का बंगला बेचने की कोशिश एसबीआई कर रहा है। इससे पूंजीपतियों में कुछ बेचैनी थी। इसलिए अब पुराने कानून और अदालत की जगह नया कानून और अदालत ही बना दी गई है और पूंजीपतियों की संपत्ति से वसूली नहीं की जाएगी।

अब ये सोचिये कि कंपनी बीमार होती क्यों है?

क्योंकि खुद मालिक पूंजीपति कंपनी से पैसा निकालकर अपनी अलग संपत्ति बना लेते हैं, जैसे खबर के मुताबिक नीरव मोदी ने कम्पनी के नाम पर लिए कर्ज से कई देशों में 13 संपत्ति खरीदी। माल्या ने भी यहां कम्पनी को दिवालिया किया और विदेश में 8 हजार करोड़ का पेमेंट ले लिया। रुइया, धूत, वगैरह सबका यही हाल है। इस तरह कम्पनी बीमार होती है, जबकि पूंजीपति और अमीर! बैंक का कर्ज डूबता है जो मेहनतकश जनता से वसूल कर लिया जाता है। किसी भी दिवालिया कंपनी के मालिक पूंजीपति दिवालिया नहीं हुए हैं बल्कि उन्होंने कर्ज में पूंजी की हेराफेरी से नए कारोबार खड़े कर लिए हैं जो अब मोदी के दिवालिया कानून में बिल्कुल सुरक्षित रहेंगे, जबकि पुराने कानून में बैंक उनसे भी वसूली कर सकते थे।